

राजेन्द्रसूरि जन्म सार्ध शताब्दि ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०२०३९)

मुख्य टाइटल

प्रथम खण्ड

भक्ति का जीवन्त प्रतीक यह ग्रन्थ

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

विषय-सूची

शुभ कामना

श्रद्धाजलि

द्वितीय खण्ड – गुरुदेव-कृतित्व, व्यक्तित्व परम्परा -----	३-८०
तृतीय खण्ड – समाज दर्शन -----	३-३०
चतुर्थ खण्ड – जैन तत्त्व-ज्ञान-दर्शन	
पार्श्व और महावीर का शासन भेद – मुनि नथमलजी -----	३
महावीर-जीवन और मुक्ति के सूत्रकार – प्रो. जयकुमार -----	७
महावीर की महिमा - लक्ष्मीचन्द्रजी -----	१३
महावीर की वाणी – श्री कैलाश -----	१५
अमीक्षण ज्ञानोपयोग – उपाध्याय विद्यानन्द मुनि -----	१६
तीन मुक्तक – दिलीप जैन -----	१७
आचार्य सिद्धसेनगणि और तत्त्वार्थभाष्य वृत्ति – डॉ. अमरा जैन -----	१८
वर्तमान समाज और भगवान महावीर का अनेकान्त सिद्धान्त – श्रीचन्द्र चोरडिया -----	२४
तत्त्वामिव्यक्ति निर्बाध शैली-स्याद्वाद – रमेश मुनि शास्त्री -----	२८
जैन दर्शन के मूल तत्त्वों का संक्षिप्त स्वरूप – साध्वी धर्मशीलाश्रीजी -----	३४
व्यवहार, निश्चयनय व अनेकान्तवाद – श्रीमती फूलकुंवर जैन -----	३६
हम और हथकड़ी – बापूलाल सकलेचा-----	३८
अपरिग्रह-एक अनुचिन्तन – आचार्य आनन्द ऋषिजी -----	३९
अपरिग्रह – डॉ. वीणा जैन -----	४१
भगवान् महावीर की वाणी में अपरिग्रह – प्रो. श्रीचन्द्र जैन -----	४३
जैन, बौद्ध और गीतादर्शन में मोक्ष का स्वरूप-एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. सागरमल जैन -----	४५
कर्म की शक्ति और उसका स्वरूप – उपाध्याय अमर मुनिजी -----	५२
जैन दर्शन में कर्मवाद की महत्ता – साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी -----	६१
जैन दर्शन में पुद्गल का स्वरूप – चन्द्रकान्त संघवी -----	६४
जैन कर्म सिद्धान्त-तुलनात्मक विवेचन – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी -----	६५
जैन दर्शन का तात्त्विक पक्ष-वस्तु स्वातन्त्र्य – डॉ. हुकमचन्द्र भारिल्ल -----	६७

आध्यात्मिक विकास के सोपान - यतीन्द्रविजयजी -----	७०
कर्मणार्थ-समाजवाद - बशीर अहमद -----	७३
रीता दिन - दिनकर सोनवलकर -----	७४
गुणस्थान-आत्मोत्थान के सोपान - मुनि महेन्द्रकुमारजी -----	७५
जैन धर्म में स्त्रियों के अधिकार - पं. परमेष्ठीदास जैन -----	७९
आत्म विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन - साध्वी सुदर्शनाश्रीजी -----	८१
ध्यान साधना-आधुनिक सन्दर्भ - डॉ. नरेन्द्र भानावत -----	८५
आत्मा आनन्द धन्य स्वरूप है - रतनलाल कांठेड-----	८९
वैराग्य - स्वामी शिवानन्दजी शास्त्री -----	९१
उपवास और आध्यात्मिक विकास - मानकलाल गिरिया -----	९३
खुशियों के अम्बार सजाऊँ - श्रीमती कोकिला भारतीय -----	९४
नमस्कार ज्योति - मफतलाल संघवी -----	९५
कुछ मुक्ताएँ - पं. शान्तप्रकाश -----	९६
जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में योगदान - बालचन्द्र कोठारी -----	९७
जैन साहित्य-श्वेताम्बर, दिगम्बर - डॉ. रमेशचन्द्र राय -----	१००
जैन साहित्य में लोक कथा के तत्त्व - डॉ. बसन्तीलाल बम -----	१०३
जैन गणित की अप्रतिम धाराएँ - प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन -----	१०५
मालव का जैन वाङ्मय - डॉ. तेजसिंह गौड़ -----	१०६
चतुर्विंशति पट्ट या चौबीसी - शैलेन्द्रकुमार रस्तोगी -----	११२
महावीर पूर्व जैन धर्म की परम्परा-आत्मानुसन्धान की यात्रा - डॉ. महावीरलाल जैन -----	११४
समाज क्या प्रगति के पथ पर है - मुनि श्री विचक्षणविजयजी -----	११८
कामनाओं का अन्त करना ही दुःख का अन्त करना है - मानव मुनि -----	११९
महावीर युगीन काल - डॉ. एस. एम. पहाड़िया -----	१२०
भारतीय कला में पुराण-कथाएँ - प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी -----	१२३
रामायण की लोकप्रियता - वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री -----	१२९
अमरीकी संग्रहालयों एवं निजी संग्रहों में जैन प्रतिमाएँ - डॉ. ब्रजेन्द्रनाथ वर्मा -----	१३१
जैन योग-एक चिन्तन - देवेन्द्र मुनि शास्त्री -----	१३४
महिला समाज को महावीर-दर्शन की देन - डॉ. श्रीमति शान्ता भानावत -----	१३७
आकार का महत्त्व - श्री भद्रीलाल जैन -----	१४०
ओसवाल जाति का इतिहास - श्री अगरचन्द्र नाहटा -----	१४३
जैन समाज की दिशा-उत्थान या पतन - श्री सी. बी. भगत -----	१४६
जन समाज द्वारा धार्मिक शिक्षण व्यवस्था - श्री सौभाग्यमल जैन -----	१४७
जैन कौन - सौ. पारसरानी महेता -----	१४८
साधना और सम्यग्दर्शन - मुनि अजितकुमार -----	१४९
जैन धर्म का मूलाधार-सम्यग्दर्शन - डॉ. प्रेमसिंह राठोड़ -----	१५३

श्री तीर्थकर परमात्माओं की लोकोत्तर चार उपमाएँ – श्री विजय सुशिल सूरि -----	१५९
तीर्थकरों के लांछन और शासन देवता – श्री बालचन्द्र जैन -----	१६२
महाराष्ट्र की संस्कृति पर जैनियों का प्रभाव – रिषभदास राँका -----	१६४
जैन कथा साहित्य-एक पर्यवेक्षण – श्री जयन्तविजय -----	१७३
जैन विद्वानों द्वारा हिन्दी में रचित कुछ वैद्यक ग्रन्थ – आचार्य राजकुमार जैन -----	१७८
जैन धर्म – यशवंतकुमार नांदेचा -----	१८२
जीवरक्षा-सृष्टि सन्तुलन के लिए आवश्यक – हुकमचन्द्र पारेख-----	१८४
जैन योग-एक चिन्तन – देवेन्द्र मुनि शास्त्री -----	१८६
अध्यात्म वैभव – मुनि नरेन्द्र विजय -----	१८९
ललित विस्तारगत वस्तु विचार-तत्कर्तृश्च समासत-परिचय – श्री भद्रङ्करसूरिजी -----	१९१
पंचम खण्ड – जैन तीर्थ-शिल्प कथाएँ	
रेगिस्तान का प्राचीन तीर्थ श्री भांडवाजी – श्री भूरचन्द्र जैन -----	३
चमत्कारों की दुनिया में श्री महुरि पार्श्वनाथ – मुनि श्री राजरत्नसागरजी महाराज -----	५
तीर्थ क्षेत्र श्री लक्ष्मणीजी – मुनि श्री जयंतविजयजी -----	७
सांडेराव के जैन मन्दिर – वैद्यराज चुनिलाल -----	९
जैसलमेर जैन मन्दिर एवं उनकी कलात्मक समृद्धि – विजयशंकर श्रीवास्तव -----	१०
चित्र और सम्भूति मुनि – राजमल लोढा -----	१३
षष्ठम खण्ड – परिषद् दर्शन	
मधुकर मधुमय जीवन कर दो – निर्मल सकलेचा-----	२६
प्रार्थना – राजमल नांदेचा -----	२७
आत्म शुद्धि गीत – महेन्द्र भण्डारी -----	२८
मंगल गीत – डॉ. शोभनाथ पाठक -----	२८
अ. भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् – मुनि श्री लेखेन्द्रशेखरविजयजी -----	२९
अ. भा. राजेन्द्र जैन नवयुक्त परिषद् के उद्देश्य – श्री कांतिलाल जैन -----	३०
परिषद् की उपलब्धियाँ – श्री सौभाग्यमल सेठिया -----	३१
राजेन्द्र जैन नवयुक्कवक परिषद् का उद्गम एवं विस्तार – श्री भँवरलाल छाजेड़ -----	३३
परिषद् की समाज में आवश्यकता – श्री जुगराज के. जैन -----	३५
परिषद् कान्ति का शंखनाद – डॉ. प्रेमसिंह राठोड़ -----	३६
समाज में परिषद् का आर्थिक योगदान – श्री शान्तिलाल सुराणा -----	३७
परिषद् क्यों – श्री बालचन्द्र जैन -----	३९
रे मान मत कर – श्री मांगीलाल बुरड -----	४०
परिषद् की चौखट से – श्री सुरेन्द्र लोढा -----	४१
परिषद्-उद्गम प्रेरणा, प्रगति – श्री हस्ति सी. कर्नावट -----	४४
परिषद् की उपादेयता – श्री सुजानमल सोनी-----	४६
परिषद् शाखाएँ -----	४७

आचार्य श्री यतीन्द्र और परिषद्	४९
परिषद् के अधिवेशन	६४
परिषद् कार्य कसमिति की बैठकें	६५
केन्द्रीय अधिवेशन	६६
प्रतियोगिताएँ-एक रपट – श्री नलिनकुमार संघवी	६८
शाश्वत धर्म – श्री सुरेन्द्र लोढा	६९
परिषद् के चार उद्देश्य -	७२
यज्ञ का घोड़ा – श्री भँवरलाल नाँदेचा	७३
हमें गन्तव्य पर पहुँचना है – श्री फकीरचन्द्र जैन	७५
जैन दर्शन-वार्तालाप – श्रीमती चन्द्रकान्ता भण्डारी	७६
ग्रन्थ प्रकाशन के सहयोगी दानदाता	७७
सप्तम खण्ड – गुजराती विभाग	
परम योगी श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरिजी महाराज – मुनि श्री जयन्तविजयजी	१
स्वावलम्बननी प्रेरणामूर्ति -	५
पू. गुरुदेवनी स्मृतिथी सर्जन – श्री कीर्तिलाल हालचंद वीरा	७
श्रेयमार्गी श्राविका अने आदर्श आराधिका सुलसा – श्री पुनमचंद नागरदास दोशी	८
जैन धर्मना प्रचार माटे नाटक-कलानो उपयोग – पू. मुनि श्री शीलचंद्र विजयजी	११
श्री जिनागम अने जैन साहित्य – श्री कपूरचंद रणछोडदास वारैया	१५
द्वादशार नयचक्र-એક ચિન્તન – आचार्य श्री विक्रमसूरीश्वरजी महाराज	१८
जय श्री स्थंभन पार्श्वनाथ-એક પરિચય -	२१
ભગવાન મહાવીરે ચૌથેલોમૂલ માર્ગ – मुनि श्री अमरेन्द्रविजयजी	२२
કર્મવાદની સામાન્ય રૂપરેખા – श्री भूबचंद केशवलाल पारेष	२५
साधना मार्गनो सक्रिय शुभारम्भ अर्थात् देशविरति धर्म (બાર વ્રતો)– સાધ્વી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી	૩૩
રાજનગર અને ગુરુદેવ – श्री બચુભાઈ ચીમનલાલ થારૂ	૩૬
ગૌરવવન્તી ધરતી-થરાદની – श्री ચંદ્રકાન્ત ભૂદરદાસ વોરા	૩૭
અષ્ટમ ખણ્ડ – અંગ્રેજી	
Role of Jainism in Modern India – Dr. B. H. Kapadia	3
Jainism in South India – T. K. Tukol	6
Jainism in Tamilnad – S. Gajpathi	12
The Attendant Devis of Jinas – Dr. C. L. Prabhakar	24
Evolution of the Sanskrit Stage – Dr. N. P. Unni	29
Jainism in South India – G. V. Raju	33
Rajendra Suri-A Reformer and Revivalist – B. N. Luniya	38